B.A. (Hons & Sub.) Part-I
Paper-II
Abnormal-Psychology
By- Dr. Ramendra Kumar Singh
Deptt of Psychology
D.K. College, Dumraon
(Buxar).

Differences between mental retardation and Mental disease

असामान्य मनोविज्ञान के अन्तर्गत मानसिक दुर्बलता एवं मानसिक विकृति के अध्ययन को विशेष स्थान प्राप्त है, क्योंकि दोनों ही असामान्यता (Abnormality) के परिचायक हैं। दोनों ही स्थितियों में व्यक्तियों के व्यवहारों में विसामान्यताएँ (Deviancy विचलन) पाई जाती हैं। ऐसे लोगों के संवेगात्मक व्यवहार एवं अभियोजनात्मक कार्यकलापों में गड़बड़ियाँ पाई जाती हैं, तथापि दोनों तरह की समस्याओं से ग्रस्त व्यक्तियों के कारण लक्षण एवं स्वरूप एवं पुर्नलाभ की संभावनाओं में अन्तर पाया जाता है, जिसे निम्नवत् प्रस्तुत किया जा सकता है:—

(1) मानसिक दुर्बलता एक Subnormal mental Condition अर्थात अधोसामान्य मानसिक अवस्था होती है। इनका बौद्धिक विकास एक खास स्तर पर आकर रुक जाती है।

जबकि मानसिक विकृति में बौद्धिक विकास अवरुद्ध नहीं होती है बल्कि कुछ सांवेगिक समस्याओं के कारण वह व्यक्ति अपनी बुद्धि का सही-सही इस्तेमाल नहीं कर पाता है।

(2) मानसिक दुर्बलता सामान्यतः जन्मजात होती है। बहुत ही कम बच्चों में ऐसी दुर्बलताएँ जन्म के कुछ समय बाद विकसित होती हैं।

दूसरी तरफ अधिकतर मानसिक विकृति अथवा

अर्जित होते हैं। कई ऐसी मानसिक बीमारियाँ होती हैं जिसका कारण Psychosocial एवं cultural factors होते हैं। जन्म के समय असामान्यता के लक्षण प्रायः नहीं दिखाई पड़ते हैं। ये लक्षण वातावरण के प्रभाव से उत्पन्न होते हैं।

(3) मानसिक रूप से दुर्बल व्यक्तियों का शारीरिक एवं मानसिक विकास प्रारंभ में ही अवरुद्ध हो जाता है। अतः उनके शरीर एवं मस्तिष्क का उचित विकास नहीं हो पाता है, ऐसे लोगों की बौद्धिक क्षमता सीमित हो जाती है।

परन्तु मानसिक विकृति या रोग में मस्तिष्क एवं बुद्धि का विकास हो जाता है, परन्तु बाद में किसी कारणवश उसमें असामान्यताएँ आ जाती हैं, जिससे उनका समायोजन गड़बड़ा जाता है और व्यवहार असामान्य हो जाता है।

(4) मानसिक दुर्बल व्यक्ति के व्यक्तित्व में विच्छेद कम ही देखने को मिलता है। लेकिन अधिकांश मानसिक रोग से ग्रस्त व्यक्तियों के व्यक्तित्व में पूर्णतः या अंशतः विच्छेदन अवश्य ही पाया जाता है।

(5) मानसिक विकृति अथवा मानसिक दुर्बलता से ग्रस्त व्यक्तियों की तुलनात्मक अध्ययन करने पर हम पाते हैं कि Mentally retarded व्यक्ति में कई प्रकार के शारीरिक एवं मानसिक दोष पाये जाते हैं, जिसे देखकर आसानी से पहचाना जा सकता है। ऐसे लोगों का सिर बड़ा, पैर छोटा एवं मोटा, कद नाटा होंठ सूखे, मोटे, कटे एवं बुद्धि की कमी होती है।

लेकिन अधिकांश मानसिक विकृति से ग्रस्त व्यक्तियों में यदि अपवाद को छोड़ दिया जाए तो ऐसे बाह्य लक्षण नहीं दिखते हैं। कुछ Neurotic Patient को तो देखने से पता भी नहीं चल पाता है कि उन्हें कोई समस्या भी होगी।

(6) मानसिक रूप से दुर्बल व्यक्तियों बुद्धि की कमी के कारण सही एवं गलत का ज्ञान नहीं होता है, जिसके कारण ऐसे लोग नासमझी वश अपराध कर बैठते हैं। ध्यान देने वाली बात यह है कि ऐसे लोग जानबूझकर अपराध नहीं करते बल्कि समझ की कमी के कारण करते हैं।

लेकिन मानसिक विकृति से ग्रस्त व्यक्ति अपराध कम ही करते हैं। कुछ गंभीर मानसिक विकृति से ग्रस्त

व्यक्ति ही अपराध कभी कभार कर बैठते हैं जिसका कारण भी कुछ अलग किस्म का होता है।

(7) आत्मनिर्भरता के दृष्टिकोण से अगर देखा जाए तो मानसिक रूप से कमजोर व्यक्ति बहुत ही सीमित मात्रा में आत्मनिर्भर बन पाते हैं। कुछ Idiot (जड़) और Imbecile (मूढ़) तो पराश्रयी होते हैं। उन्हें सहारे एवं देखभाल की जरूरत होती है। केवल Moron (मूर्ख) को कुछ हद तक आत्मनिर्भर बनाया जा सकता है।

दूसरी तरफ अधिकांश मानसिक रोगी आत्मनिर्भर होते हैं। केवल विशेष तरह के Psychosis के रोगी ही आत्मनिर्भरता की क्षमता को खो देते हैं।

(8) अध्ययनों से ज्ञात होता है कि Mental retardation का सम्बन्ध वंशपरम्परा से है। कुछ ऐसे संक्रामक रोग होते हैं जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में ट्रान्सफर हो जाती है। ऐसे रोगों का सम्बन्ध बौद्धिक विकास से है। ऐसे संक्रामक रोग बुद्धि के विकास को रोकने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सिफिलिश, मानसिक आघात, Brain injury आदि के कारण बौद्धिक विकास अवरुद्ध हो जाती है।

लेकिन मानसिक रोग का कारण Mental Conflict है। इसकी उत्पत्ति में वातावरण की अधिक भूमिका होती है, लेकिन कुछ मानसिक रोग जैसे Schizophrenia आदि में वंशपरम्परा (Heredity) की भूमिका होती है।

(9) उपचारात्मक दृष्टि से भी दोनों में काफी अंतर है। मानसिक दुर्बलता से ग्रस्त व्यक्ति का उपचार बड़ा ही कठिन कार्य है।

बहुव्यक्तित्व आदि के लक्षण नहीं होते हैं। इसके विपरीत मानसिक रोगियों में ये सारे लक्षण अवश्य ही पाये जाते हैं। मनोविदलता (~~Paranoia~~ Schizophrenia) एवं व्यामोह (Paranoia) के रोगियों में ये सारे लक्षण अवश्य ही पाये जाते हैं।

(11) मानसिक दुर्बलता के शिकार व्यक्ति का चिन्तन कमजोर होता है। ये कल्पना एवं दिवास्वप्न आदि की क्षमता से वंचित होते हैं।

दूसरी मानसिक रूप से विकृत व्यक्ति में ये सारी क्षमताएँ विद्यमान होती हैं और प्रायः ही ऐसे लोग इसका इस्तेमाल करते हैं।

उपर्युक्त तथ्यों के आलोक में निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि मानसिक विकृति एवं मानसिक मंदन एक दूसरे से ~~समानता~~ समानता रखते हुए भी स्वरूप, लक्षण, कारण एवं समायोजन तथा उपचार के लिहाज से एक दूसरे से भिन्न है। मानसिक दुर्बलता एक तरह की Structural disorder है, वहीं मानसिक विकृति एक तरह का Functional disorder है।

R K Singh
15.05.2020
डॉ० रमेश कु० सिंह
विभागाध्यक्ष
मनोविज्ञान विभाग
डी० के० कॉलेज, डुमराँव
(बक्सर)।